भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका

सेवा संवाद

वर्ष-17, अंक-03, वि. स. 2078, युगाब्द 5122 मई - 2021 डिजिटल संस्करण

सदस्यता शुल्क : संरक्षक : रु. 5000/- आजीवन : रु. 2000/-

मार्गदर्शक :

- डॉ. कृष्णगोपाल
  संस्थापक न्यासी
- श्री ब्रह्मदेवशर्मा 'भाई जी'
  संस्थापक न्यासी
- श्री ओमप्रकाश गोयल
  अध्यक्ष
- श्री राहुल सिंह
  सचिव/प्रबंध न्यासी

सम्पादक :

- डॉ शिवभूषण त्रिपाठी

सह-सम्पादक :

- राजेश

मुद्रक एवं प्रकाशक :

- जितेन्द्र कुमार अग्रवाल

प्रबंधक :

- विजय अग्रवाल

केन्द्रीय कार्यालय :

भाऊराव देवरस सेवा न्यास
सी-91, निराला नगर,
लखनऊ, उ.प्र.-226020
दूरभाष: 0522-4001837,
0522-2789406
मो: 9450020514
E-mail : bdsnyas@yahoo.co.in
web : www.bhaoraonyas.org

दिल्ली कार्यालय :

E-mail: bdsnyas.dl@gmail.com
मो : 9811068375

आलोकः प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं। प्रकाशक एवं सम्पादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संरक्षक सहयोग राशि : रु 5000/-

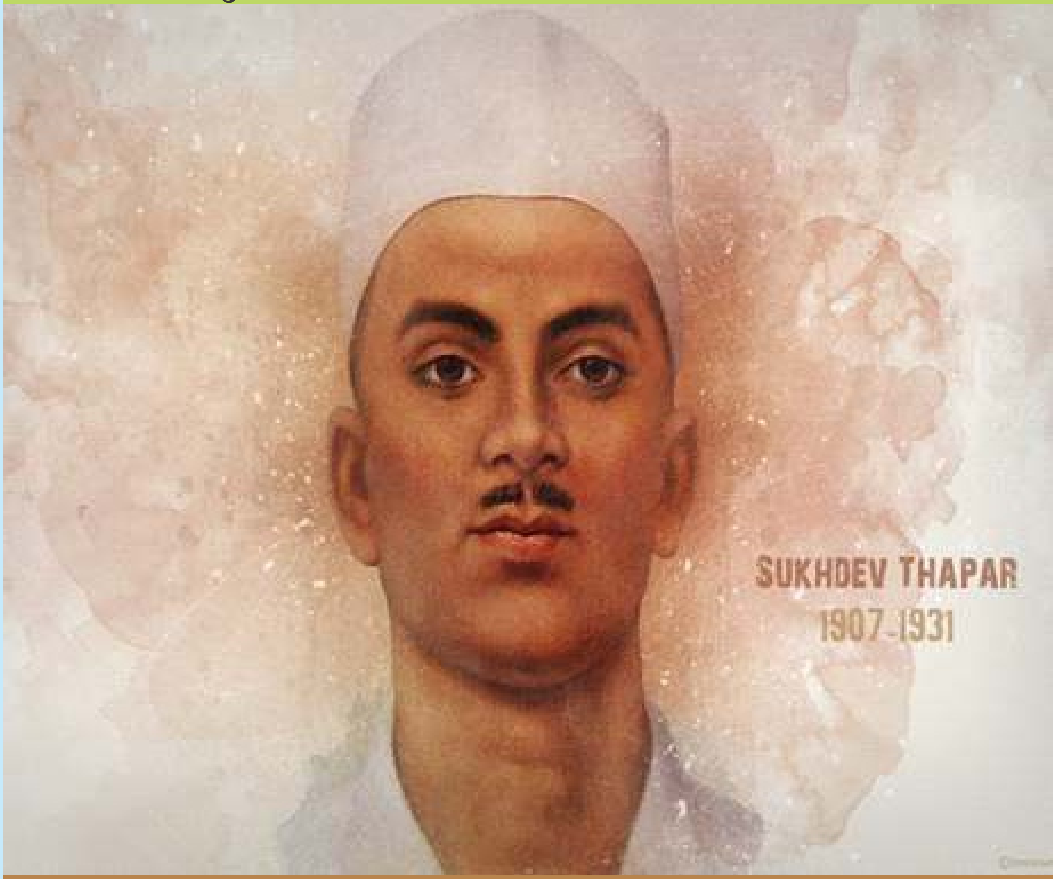

जन्म - 15 मई 1907 बलिदान - 23 मार्च 1931

क्रांतिकारी सुखदेव थापर

युवा क्रान्तिकारी सबल, थे सुखदेव महान।
किया समर्पित राष्ट्र-हित, जीवन तन-मन प्राण।।
युवा छात्र की प्रेरणा, देशभक्त था नाम।
भगत सिंह के मित्र को, आदर सहित प्रणाम।।

-शिव

सेवा संवाद के संरक्षक एवं आजीवन सदस्य

आपकी पत्रिका सेवा संवाद अब डिजिटल रूप में प्रकाशित करने का निर्णय न्यास द्वारा किया गया है | आप सभी से अनुरोध है कि डिजिटल संस्करण आपको नियमित मिलता रहे, उसके लिए अपना मोबाइल नंबर और ई-मेल आईडी जल्द से जल्द न्यास के ई-मेल आईडी –bdsnyas.dl@gmail.com पर प्रेषित करें |

भाऊराव देवरस सेवा न्यास

सहकार निवेदन

पिछले 26 वर्षों में न्यास के सेवा कार्यों में जो उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है, उसमें किसी न किसी रूप में आपका ही स्नेह सहयोग रहा है। न्यास के पास आर्थिक संसाधनों की बहुत कमी है। न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्यों का व्याप बढ़ाने के लिए न्यास के आय स्त्रोत को बढ़ाना होगा। न्यास द्वारा प्रस्थापित कार्पस फण्ड से प्राप्त होने वाली ब्याज राशि भी इस कार्य में प्रयुक्त होती है। अतः लक्ष्य तक पहुँचने हेतु कार्पस फण्ड भी बढ़ाना होगा। समाज सेवा के क्षेत्र में गौरव को बढ़ाने वाले इस महत कार्य में जन-जन का सहयोग एवं सहकार अपेक्षित है। आप सभी उदारमना सेवाभावी महानुभावों के सहकार से ही यह न्यास सेवारत है।

न्यास के सेवा कार्यों हेतु आप इस प्रकार से सहयोग कर सकते हैं-

1. सचल चिकित्सा सेवा - रु. 11,000 की मासिक धनराशि का सहयोग करके एक सेवा बस्ती में अपनी ओर से निःशुल्क चिकित्सा सुविधा एवं औषधि का वितरण कराना।
2. नेत्र चिकित्सा सेवा - रु. 5000 की धनराशि का सहयोग कर एक मोतियाबिन्द पीड़ित नेत्र रोगी का आपरेशन करवाकर उसे नेत्र ज्योति प्रदान कराना।
3. विकलांग सहायता सेवा - रु. 1,000 से 6,000 तक की राशि दे कर एक विकलांग बन्धु की सहायता में उसके लिए कृत्रिम अंग, उपकरण, बैसाखी, ट्राईसाइकिल, व्हील चेयर आदि की व्यवस्था कराना।
4. कार्पस फण्ड (स्थायी निधि)- रु. 10,000 से अधिक की धनराशि का अर्पण करके न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्यों में उत्प्रेरक बनना।
5. छात्रवृत्ति- न्यास द्वारा जरूरतमंद छात्रों को वार्षिक छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है जिसमें आपका सहयोग अपेक्षित है। कक्षा के अनुसार छात्रवृत्ति इस प्रकार है - प्राथमिक : रु 3000, माध्यमिक (जू.हा.) : रु 5,000, हाईस्कूल : रु 7,000, इण्टरमीडिएट : रु 8000, आई.टी.आई/डिप्लोमा एवं स्नातक : रु 10,000, परास्नातक : रु 12,000, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु : रु 15,000, इंजीनियरिंग : रु 18,000 और मेडिकल : रु 20,000।
6. सेवा चेतना (अर्द्धवार्षिक पत्रिका) - रु. 1,200 की आजीवन सदस्यता ग्रहण करके तथा पत्रिका की विज्ञापन दरों के आधार पर अपनी क्षमतानुसार विज्ञापन के रूप में सहयोग करके सहायता करना।
7. सेवा संवाद (मासिक) - रु. 2,000 की आजीवन एवं रु. 5,000 की संरक्षक सदस्यता ग्रहण करके सहयोग करना।
8. माधव सेवा आश्रम - रु. 5,00,000 का दान कर, एक कक्ष के निर्माण के द्वारा अपने किसी सम्बन्धी की स्मृति को स्थायी बनायें।
9. विश्राम सदन - दिल्ली - दिल्ली में एम्स के निकट न्यास द्वारा संचालित विश्राम सदन में प्रति बेड के लिए वार्षिक रु. 21,000 की कमी रहती है जिसके लिए सहायता राशि अपेक्षित है। आप एक या अधिक बेड के लिए राशि प्रेषित कर सकते हैं।
10. अक्षय सेवा - दिल्ली में एम्स एवं दो अन्य अस्पतालों के निकट दोपहर में होने वाले भोजन वितरण के लिए रु. 6,000 (प्रतिदिन/प्रति अस्पताल) की सहायता राशि अपेक्षित है। आप एक या अधिक दिनों के लिए राशि प्रेषित कर सकते हैं।
11. CSR फंड - यदि आपकी फर्म CSR में भी दान करती है तो कृपया न्यास से फोन या ईमेल द्वारा सम्पर्क करें।

न्यास को सेवा कार्यों के लिए दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G(5) के अन्तर्गत नियमानुसार करमुक्त है। प्रत्येक दानदाता को अपना पता व पैन बताना अनिवार्य है। साथ ही आपसे अनुरोध है कि आप एक पत्र भी भेजें कि आप यह राशि न्यास को दान के रूप में दे रहे हैं। समाज के सेवा-कार्यों हेतु अनुरोध है कि न्यास को यथा सम्भव अधिकाधिक सहयोग करें। दानराशि भेजने के विभिन्न माध्यम इस प्रकार हैं :

- चेक व ड्राफ्ट द्वारा जो, भाऊराव देवरस सेवा न्यास के पक्ष में लखनऊ या दिल्ली में देय हो, अपने पैन नं. व पते के साथ भेजें।
- अप्रवासी भारतीय भी दान दे सकते हैं। उसके लिए फोन या मेल द्वारा सम्पर्क करें।
- दान की राशि आप सीधे न्यास के खाते में भी जमा कर पैन नं., फोन नं. व पते के साथ सूचित कर सकते हैं।
  - बैंक ऑफ इण्डिया, निराला नगर, लखनऊ - खाता सं. 6806100009948 (IFSC : BKID0006806)
  - भारतीय स्टेट बैंक, निराला नगर, लखनऊ - खाता सं. 30448433657 (IFSC : SBIN0003813)
  - बैंक ऑफ इण्डिया, पटपड़गंज, नई दिल्ली - खाता सं. 605810110013350 (IFSC : BKID0006058)

आशा है सेवा के इस पुनीत कार्य में आप सभी अवश्य सहभागी बनेंगे।

अपनी बात

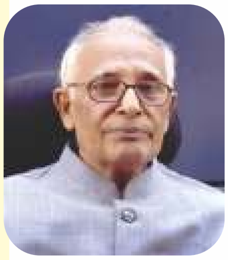

इस सृष्टि में मनुष्य के अतिरिक्त जितने भी प्राणी व जीव-जन्तु हैं, वे अपने जीवन का सुख-दुख आदि भोग भोगकर ऊर्ध्व गति को प्राप्त होते हैं, अर्थात् उनका अगला जन्म अच्छी श्रेणी में होता है। इसके लिए उन्हें कोई प्रयास नहीं करना पड़ता, उनकी कभी अधोगति भी नहीं होती है, अर्थात् जिस श्रेणी की योनि में वे जन्मते हैं, उससे अच्छी योनि को मरणोपरान्त प्राप्त करते हैं। परन्तु मनुष्य के साथ ऐसा नहीं है। मानव को परमात्मा ने सर्व सामर्थ्य से युक्त सम्पन्न बनाया है, उसमें अच्छे बुरे की पहचान करने की शक्ति है, उसमें विवेक बुध्दि है, वह चाहे तो मनुष्य से देवता बन सकता है, ऊर्ध्व गति को प्राप्त कर सकता है अन्यथा वह अधोगति को प्राप्त होकर नारकीय जीवन जीने के लिए मजबूर हो सकता है और इसके लिए वह किसी को दोष नहीं दे सकता। पुरुषार्थ चतुष्टय - धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष केवल मनुष्य के लिए ही है। इसलिए मानव जीवन को सार्थक बनाने के लिए प्रयास, शिक्षण और प्रशिक्षण की आवश्यकता निरंतर बनी रहती है। इस दिशा में सृष्टि के आरम्भ से ही मानव क्रियाशील और गतिशील रहा है। ऋषि-मुनियों, संत, महात्माओं, वैज्ञानिकों, चिन्तकों और दार्शनिकों द्वारा हमारा मार्ग प्रशस्त होता रहा है। तथापि हर मनुष्य को आत्मोन्नति के लिए स्वयं क्रियाशील होना पड़ता है, तभी व्यक्ति, समाज, देश और राष्ट्र का कल्याण संभव है। अस्तु मनुष्य होने के नाते हमारा यह दायित्व है कि हम एक अच्छी सोच के साथ अपनी अन्तर्निहित युवाओं को जाग्रत करने, अपने शिशुओं, देश, समाज और राष्ट्र को शिक्षित-प्रशिक्षित करने का संकल्प लेकर आगे बढ़ें।

सेवा के लिए समर्पित बन्धुओं एवं संगठनों को यह मूल मन्त्र सदा स्मरण रखना चाहिए कि अपना चित शुद्ध हो तो शत्रु भी मित्र हो जाते हैं। सिंह और सांप भी अपना स्वभाव भूल जाते हैं, विष अमृत हो जाता है, आघात हित होता है, दुःख सर्व सुख फल देने वाला बन जाता है। आग की लपट भी ठण्डी हवा हो जाती है। यही नहीं जिसका चित्त शुद्ध है उसे सब जीव अपने जीवन के समान प्यार करते हैं। कारण, सबके अन्तर में एक ही भाव, एक ही परम तत्व विद्यमान है। वेद-शास्त्र आदि का तभी तो कथन है कि 'आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् अर्थात् जो स्वयं के प्रतिकूल हो ऐसा आचरण दूसरे किसी के साथ नहीं करना चाहिए। अस्तु चित्त को शुद्ध रखने के लिए शिक्षा और सद्-संस्कारों की आवश्यकता होती है। आज समाज में अनाचार, दुराचार, भ्रष्टाचार, धोखाधड़ी आदि सब चित्त शुद्ध न होने का ही दुष्परिणाम है।

इतिहास के पन्नों पर दृष्टि डालें तो मई का महिना अनेक दृष्टि से हमारे लिए प्रेरणाओं से भरपूर और उपयोगी सिद्ध होगा। गुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर, वीर सावरकर, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, गुरु अर्जुन देव, विष्णुकान्त शास्त्री आदि ऐसे अनेक चिंतक-मनीषी, क्रान्तिकारी विद्वान लेखकों का जन्म मई में हुआ था। यद्यपि आज वे नहीं हैं परन्तु उनके कर्तृत्व हमारे बीच उपलब्ध हैं जिसे पढ़कर हम लाभान्वित-प्रेरित हो सकते हैं। सुखदेव मात्र 24 साल की उम्र में देश के लिए बलिदान देकर इस दुनिया से विदा हो गए। भारतीय स्वाधीनता संग्राम में सुखदेव एक ऐसा नाम है जो न सिर्फ अपनी देशभक्ति, साहस और मातृभूमि पर कुर्बान होने के लिए जाना जाता है बल्कि शहीद-ए-आजम भगत सिंह के अनन्य मित्र के रूप में भी उनका नाम इतिहास के पन्नों में दर्ज है जिसे पढ़कर हम लाभान्वित हों। इसी आशा आकांक्षा के साथ यह अंक आपको समर्पित है।

राजगुरु सुखदेव भगत सिंह,
थे एक से बढ़कर एक।
युवा क्रांतिकारी बलिदानी,
बेमिसाल साहसी नेक।।

-शिव

क्रांतिकारी सुखदेव थापर

बाल्यकाल से ही सुखदेव के मन में देशभक्ति की भावना कूट-कूट कर भरी थी। वह लाहौर नेशनल कॉलेज के युवाओं में देशभक्ति की भावना भरते और उन्हें स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़ने के लिए प्रेरित करते थे। इनका जन्म 15 मई 1907 को पंजाब के लुधियाना शहर में हुआ था। बचपन से ही उन्होंने भारत में ब्रितानिया हुकूमत के जुल्मों को देखा और इसी के चलते वह गुलामी की जंजीरों को तोड़ने के लिए क्रांतिकारी बन गए। एक कुशल नेता के रूप में वह कालेज में पढ़ने वाले छात्रों को भारत के गौरवशाली अतीत के बारे में भी बताया करते थे। सुखदेव का नाम प्रमुखता से 1928 की उस घटना के लिए जाना जाता है, जब क्रांतिकारियों ने लाला लाजपत राय की मौत का बदला लेने के लिए गोरी हुकूमत के कारिंदे पुलिस उपाधीक्षक जेपी सांडर्स को मौत के घाट उतार दिया था। इस घटना ने ब्रिटिश साम्राज्य को हिलाकर रख दिया था और पूरे देश में क्रांतिकारियों की जय-जयकार हुई थी। सांडर्स की हत्या के मामले को 'लाहौर षड्यंत्र' के रूप में जाना गया। अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों से ब्रितानिया हुकुमत को दहला देने वाले राजगुरु, सुखदेव और भगत सिंह को मौत की सजा सुनाई गई। 23 मार्च 1931 को तीनों क्रांतिकारी हंसते-हंसते फांसी के फंदे पर झूल गए और देश के युवाओं के मन में आजादी पाने की नई ललक पैदा कर गए। सुखदेव मात्र 24 वर्ष की उम्र में इस दुनिया से विदा हो गए। भारतीय स्वाधीनता संग्राम में सुखदेव थापर एक ऐसा नाम है जो न सिर्फ अपनी देशभक्ति, साहस और मातृभूमि पर कुर्बान होने के लिए जाना जाता है, बल्कि शहीद-ए-आजम भगत सिंह के अनन्य मित्र के रूप में भी उनका नाम इतिहास में दर्ज है।

सन 1987 में दिल्ली विश्वविद्यालय के अंतर्गत "College of Business Studies" की स्थापना की गई | 1997 में अमर शहीद सुखदेव थापर की याद में इसका नाम "Shaheed Sukhdev College of Business Studies" कर दिया गया |

राजगुरू भगत सिंह सुखदेव

अक्षय सेवा - नर सेवा नारायण सेवा

दिल्ली महानगर में लाखों लोग देश के विभिन्न हिस्सों से इलाज करवाने आते हैं। यहाँ उनके पास दो वक़्त रोटी खाने का भी साधन नहीं होता। अपने भाऊराव देवरस सेवा न्यास के लिए हर्ष का विषय है कि 28 अप्रैल 2017 को अक्षय तृतीया के पावन पर्व पर आप सब के सहयोग और आशीर्वाद से हमने जो दिल्ली के तीन अस्पतालों में लगभग 2000 गरीब और जरूरतमंद लोगों के लिए दोपहर का भोजन देने का अपना प्रकल्प शुरू किया था उसे अब चार वर्ष पूर्ण हो गए हैं।

आज तक आपके सहयोग से 32 लाख से भी अधिक लोगों को निशुल्क भोजन मिल पाया है। चार वर्षों से अनवरत यह सेवा कर पाने में न्यास को समर्थ बनाने में आप जैसे समाज के विभिन्न सक्षम एवं सेवा भावी लोगों का बहुत बड़ा हाथ है। हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि न्यास इस कार्य को आगे भी करता रहेगा और इसमें समाज का सहयोग भी पहले की भाँति मिलता रहेगा।

अपने इसी प्रकल्प की प्रेरणा से ही कोरोना महामारी के कारण उत्पन्न परिस्थिति में पूरी दिल्ली में समाज के जरूरतमंद कोरोना पीड़ित लोगों को न्यास द्वारा भोजन उनके घरों पर वितरित किया गया। साथ ही समय समय पर Oxygen Cylinder, PPE Kit और Sanitiser वितरण भी किया गया।

किर्तिशेष नरेन्द्र प्रताप श्रीवास्तव

आयुर्वेदाचार्य डॉ. नरेन्द्र प्रताप श्रीवास्तव 17 अप्रैल 2021 को लगभग 85 वर्ष की आयु पूर्ण कर गोलोक वासी हो गए। उनकी दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रभु से प्रार्थना करते हुए हम उनके प्रति विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। इनका जन्म 12 जनवरी1936 को हुआ था। बाल्यकाल से ही इनपर घर के अच्छे संस्कार और वातावरण का प्रभाव पड़ा। ये पिता की भाँति परिश्रमी और अध्ययनशील थे। अपने पिता द्वारा धर्म, राजनीति समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र एवं कानून आदि विविध विषयों की संग्रहित पुस्तकें इन्हें अध्ययन के लिए मानो विरासत में ही प्राप्त थीं जिनका इन्होंने अध्ययन किया। माता श्रीमती चंद्रकली देवी की धार्मिक निष्ठा, व्रत-पूजा पाठ एवं सत्याचरण का इन पर गहरा प्रभाव रहा। स्नेह और सत्याचरण इनमें साफ दिखाई देता था। इनका विद्यार्थी जीवन फतेहपुर शहर में व्यतीत हुआ जहाँ हिंदी और संस्कृत विषय के अपने शिक्षकों से वे बहुत प्रभावित हुए। पण्डित दीन दयाल उपाध्याय को वे आदर्श मानते थे। हाई स्कूल के बाद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सम्पर्क में आए, लखनऊ विश्वविद्यालय से संस्कृत में पोस्ट ग्रेजुएशन, वेदमंत्रों पर शोध। वचनेश त्रिपाठी जी के संपर्क में आकर क्रांतिकारी देशभक्त अनेक महापुरुषों से संपर्क करने, अटलबिहारी बाजपेयी जी के साथ लंबे समय तक सार्थक बातचीत का अवसर, राष्ट्रधर्म के संपादक, अखिल भारतीय संस्कृत संस्थान पुस्तकालय हजरतगंज पुस्तकालय अध्यक्ष तथा अपनी बेटी किरन श्रीवास्तव के स्कूल में भी लम्बे समय तक सेवा, सेवा चेतना पत्रिका के संपादक मंडल के एक सदस्य के रूप में अपनी सेवाएं देते रहे, इसके अतिरिक्त हिन्दी भाषा में 400 तथा संस्कृत भाषा में 600 कहानियां के माध्यम से समाज सेवा तथा राष्ट्र सेवा में जीवन पर्यन्त लगे रहे। अनेक पुरस्कारों से सम्मानित अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से वे लोकप्रिय रहे हैं। आज भले ही इनका भौतिक शरीर नहीं है तथापि अपने यशः शरीर से जीवित हैं, अमर हैं। एक बार पुनः इनके श्री चरणों में हम श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

।।ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ।।

गोलोकवासी विजय अग्रवाल

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ अधिकारी, पूर्व संयुक्त क्षेत्र कार्यवाह (उत्तर प्रदेश/उत्तराखण्ड), भाऊराव देवरस सेवा न्यास के न्यासी, अनेक सामाजिक संगठनों के दाायित्वधारी, क्षमतावान मार्गदर्शक/कार्यकर्ता, शिशुमन्दिर/विद्यामंदिरों के प्रबन्धक, पत्र पत्रिकाओं के प्रकाशक, संरक्षक, मार्गदर्शक आदि पदों पर अपनी सेवाएं देने वाले लोकप्रिय श्री विजय अग्रवाल जी का दिनांक 25 अप्रैल 2021 रात्रि 09:00 बजे जानकीपुरम, लखनऊ में आकस्मिक निधन हो गया। वे लगभग 80 वर्ष की आयु पूर्ण कर गोलोकवासी हो गये।

विविध संगठनों, न्यास परिवार, सेवा संवाद तथा सेवा चेतना पत्रिका परिवार से जुड़े हुए सभी कार्यकर्ता अपने अश्रुपूर्ण नेत्रों से कीर्ति शेष विजय अग्रवाल जी की दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं। भगवान उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान देकर मुक्ति प्रदान करें तथा उनके परिवारजनों को यह दुख सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

।।ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ।।

विनम्र श्रद्धांजलि : किर्तिशेष रमाशंकर श्रीवास्तव

एक अच्छे कार्यकर्ता के रूप में हम सबके बीच भाऊराव देवरस सेवा न्यास परिवार के भूमि सम्बन्धी कार्यों को सम्पादित करने वाले श्री रमाशंकर जी स्वर्गलोक सिधार गए। अचानक यह सुनकर किसी को विश्वास नहीं हो रहा था। पूरा न्यास परिवार निधन के समाचार से स्तब्ध रह गया। हृष्ट-पुष्ट सुगठित शरीर वाले, विभिन्न पहनावों से अपनी पहचान बनाने वाले, मधुर मुस्कान के साथ सबके स्वागत को तैयार उनका चेहरा आज चारों ओर घूमता रहता है और विस्मृत नहीं होता।

लगभग 2 सप्ताह से इन्हें बुखार आ रहा था। इनका बुखार ठीक न होने से वे तनाव में रहने लगे। 17 अप्रैल की सायंकाल बी.पी. अधिक होने से उनका एक अंग लकवा से ग्रसित हो गया और वे अचेत से हो गये। 18 अप्रैल को प्रातः 9:00 बजे उन्होंने अन्तिम सांस ली। उनका जन्म 14 दिसम्बर 1960 को हुआ था। वे अपने पीछे पत्नी, अविवाहित पुत्र अनुराग एवं पुत्री सौम्या को छोड़ गये हैं।

वे प्रारम्भ में विद्या भारती की मातृसंस्था शिशु शिक्षा प्रबन्ध समिति उ.प्र. के कार्यालय में कार्य करने के लिए नियुक्त हुए थे। उसके साथ वे लोक भारती, भाऊराव देवरस सेवा न्यास और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की इकाई में भी काम करते रहते थे। उनके स्वभाव में कार्यालय से बाहर के कार्य, जिसमें जनसम्पर्क का कार्य और अपने विद्यालयों के पंजीकरण आदि का कार्य सम्मिलित रहता था। अपने मिलनसार स्वभाव के कारण वे उ.प्र. शासन के अधिकारियों से सम्पर्क करते-करते व्यक्तिगत सम्पर्क बना लेते थे। भारतीय जनता पार्टी एवं संस्कार भारती के कार्यों के द्वारा सचिव एवं मंत्रियों से भी उनके सम्पर्क बन गये थे।

अग्रिम पंक्ति में खड़े ऐसे श्रेष्ठ कर्मठ कार्यकर्ता को भाऊराव देवरस सेवा न्यास अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है, शोक संतप्त परिवार के लिए शोक संवेदनाएं व्यक्त करता है तथा प्रभु से प्रार्थना करता है कि परिवारजनों को इस दुःख की घड़ी में धैर्य एवं शक्ति प्रदान करे।

।।ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ।।

विनम्र श्रद्धांजलि : किर्तिशेष दीपक त्रिवेदी एवं अन्य

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कोरोना महामारी से लगभग प्रत्येक परिवार प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित है। हमारे प्रकल्प के भी कुछ परिवारों ने अपने आत्मीयों को खो दिया है। प्रकल्प की वरिष्ठ सदस्या श्रीमती नीलिमा जी के पति श्री दीपक त्रिवेदी जी (वरिष्ठ आईएएस अधिकारी) का असमय चले जाना उनके परिवार के साथ साथ समाज के लिए भी अपूरणीय क्षति है। आपके साथ ही श्रीमती मोनिका शुक्ला जी ने अपनी माता जी को इस त्रासदी में खो दिया है। बहुत से अन्य परिवार भी संक्रमण के प्रभाव को अनुभव कर चुके हैं।

इन दो महानुभावों को भाऊराव देवरस सेवा न्यास अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है, शोक संतप्त परिवार के लिए शोक संवेदनाएं व्यक्त करता है तथा प्रभु से प्रार्थना करता है कि परिवारजनों को इस दुःख की घड़ी में धैर्य एवं शक्ति प्रदान करे।

।।ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ।।

प्रगति समीक्षा - महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प, (लखनऊ)

वर्तमान विषम परिस्थितियों में भी भाऊराव देवरस सेवा न्यास के अन्तर्गत महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प आनलाइन कक्षाओं का संचालन नियमित रूप से व सफलतापूर्वक संपन्न करवा रहा है।

प्रकल्प में शिक्षा ग्रहण करने वाली अधिकतर छात्राएं ग्रामीण पृष्ठभूमि से हैं | इस कठिन समय में सभी छात्राओं से नियमित रूप से सम्पर्क स्थापित करते हुए उनकी कुशलक्षेम की जानकारी ली जाती रहती है और साथ ही उन्हें बीमारी से बचाव के तरीकों से अवगत भी करवाया जाता रहता है। इस समय सभी की प्राथमिकता स्वस्थ व सुरक्षित रहना है, अतः इसी पर ध्यान केन्द्रित रखते हुए इस समय आनलाइन कक्षाओं के अतिरिक्त अन्य कोई भी गतिविधि संचालित नहीं है।

जब सभी स्वस्थ व निरोगी होंगे, तब फिर अपनी लगन व आत्मबल से लक्ष्य संधान हो ही जाएगा...ऐसी ही उम्मीद के साथ प्रकल्प का प्रत्येक सदस्य सेवा भावना के साथ अपना अपना कर्तव्य निर्वहन करता हुआ संकल्पबद्ध है।

कोरोना संक्रमण - न्यास द्वारा ऑक्सीजन सेवा, नई दिल्ली

कोरोना संक्रमण की दूसरी लहर ने अप्रैल 2021 में पूरे भारत में हाहाकार का वातावरण पैदा कर दिया था और लोग ऑक्सीजन के लिए मारे-मारे फिर रहे थे | समाज के इस कष्ट को देखते हुए न्यास ने तुरंत ऑक्सीजन गैस के लगभग 180 सिलेंडर खरीदे और लोगों को वितरित करने की योजना की जो बहुत सफल रही | यह व्यवस्था न्यास की ओर से निशुल्क की गई | ऑक्सीजन की अधिक मांग की पूर्ति हेतु न्यास ने ऑक्सीजन कॉनसंट्रेटर की व्यवस्था भी की | इस योजना के अंतर्गत न्यास की ओर से सी.ए. परिवार को ऑक्सीजन कॉनसंट्रेटर उपलब्ध करवाए गए जिन्होंने कोरोना पीड़ित रोगियों को उनके वितरण की उचित व्यवस्था की | बाद में सेवा भारती संगठन ने कुछ कोरोना सेन्टर बनाए जिनमें न्यास की ओर से ऑक्सीजन सिलेंडर उपलब्ध करवाए गए | इस प्रकार कोरोना महामारी में न्यास ने कोरोना रोगियों की ऑक्सीजन सेवा में अग्रणी भूमिका निभाई और हजारों रोगियों की प्राण रक्षा में अपना सहयोग दिया |

विभिन्न विश्राम सदन में अप्रैल - 2021 की उपस्थिति

क्र.स.	राज्य/देश	माधव सेवा आश्रम, लखनऊ	KGMU, लखनऊ	विश्राम सदन, दिल्ली	IGIMS, पटना
1	जम्मू कश्मीर	0		0	
2	हिमाचल प्रदेश	0		0	
3	पंजाब	0		0	
4	हरियाणा	0		0	
5	दिल्ली	4	कोरोना के कारण यह केंद्र चिकित्साकर्मियों द्वारा उपयोग किया जा रहा है |	13	कोरोना के कारण यह केंद्र चिकित्साकर्मियों द्वारा उपयोग किया जा रहा है |
6	उत्तराखंड	61		0	
7	उत्तर प्रदेश	3573		47	
8	बिहार	2102		19	
9	झारखण्ड	84		0	
10	सिक्किम	0	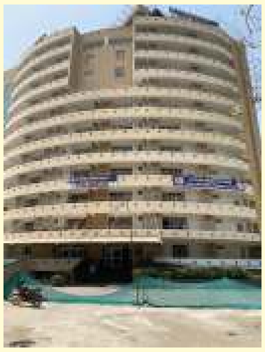	0	
11	नागालैंड	0		0	
12	असम	0		6	
13	मणिपुर /मिजोरम	0		0	
14	अरुणाचल प्रदेश	0		0	
15	त्रिपुरा	0		0	
16	मेघालय	0		0	
17	प. बंगाल	9		5	
18	ओडिशा/अंदमान	60		3	
19	आंध्रप्रदेश/तेलंगाना	0		2	
20	तमिलनाडु /पुदुच्चेरी	0		0	
21	कर्नाटक	0		0	
22	केरल	0		0	
23	महाराष्ट्र /गोवा	99		0	
24	मध्य प्रदेश	65		0	
25	छतीसगढ़	5		0	
26	गुजरात	0		0	
27	राजस्थान	0		0	
28	अन्य	0		0	
	पड़ोसी देश				
29	नेपाल	47		9	
30	बांग्लादेश	0		0	
31	अन्य देश	0		0	
	योग (इस मास)	**6109**	**0**	**104**	**0**
	योग (इस वर्ष)	**6109**	**0**	**104**	**0**

कुल मुद्रित पृष्ठ की संख्या : 10

स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प - लखनऊ

लखनऊ और उसके आस पास दी जाने वाली चिकित्सा सेवाओं का विवरण

सेवा बस्ती में स्वास्थ्य केन्द्र (सेवा समर्पण संस्थान - बिन्दौवा)	62
माधवरव देवड़े स्मृति रूग्न सेवा केन्द्र, निराला नगर	
एलोपेथिक	51
होम्योपैथिक	176
रूग्ण सेवा केन्द्र, माधव सेवा आश्रम - होम्योपैथ	190
कुल लाभान्वित रोगी	479

देवड़े नेत्र चिकित्सालय

अप्रैल 2021 में दी गई सेवाएँ

नेत्र परिक्षण	157
चश्मा वितरण	103
मोतियाबिंद ऑपरेशन	0
पैथोलॉजी	2
कुल लाभान्वित रोगी	262

आलोक : नेत्र एवं पैथोलॉजी जांच केवल 20 रूपए के पंजीकरण शुल्क में उपलब्ध है।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास के प्रकल्प

प्रकल्प का नाम	सम्पर्क सूत्र	दूरभाष
स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प, लखनऊ	श्री ओ.पी. श्रीवास्तव	9839785395
माधव सेवा आश्रम, लखनऊ	श्री शरद जैन	9670077777
महामना शिक्षण संस्थान, लखनऊ	श्री रंजीव तिवारी	9731525522
महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प, लखनऊ	श्रीमती अर्चना दीक्षित	9821483861
सामाजिक विज्ञान एवं प्रशिक्षण संस्थान, लखनऊ	डॉ हरमेश चौहान	9450930087
विश्राम सदन के.जी.एम.यू. लखनऊ	श्री जितेन्द्र कुमार अग्रवाल	9415003111
देवड़े नेत्र चिकित्सालय, लखनऊ	श्री राजेश	9793120738
सेवा संवाद (मासिक) लखनऊ	डॉ शिवभूषण त्रिपाठी	9451176775
सेवा चेतना (अर्द्धवार्शिक) लखनऊ	डॉ विजय कर्ण	8887671004
एम्स पावर ग्रिड विश्राम सदन, दिल्ली	श्री राजीव गुगलानी	9810262200
अक्षय सेवा, दिल्ली	श्री रामअवतार किला	9811052464
समर्थ भारत, दिल्ली	श्री शोनाल गुप्ता	9811190016
भारतीय संस्कृति अध्ययन केन्द्र	श्री गौरव गर्ग	9918532007
विश्राम सदन, IGIMS पटना (बिहार)	श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह	9431114457